International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 09-10

हिन्दी में नाटक का स्थान

डॉ० अनिल कुमार [1]
[1] भगत फुल सिहं महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

सारांश
हिन्दी में नाटक शब्द का जा अर्थ प्रयुक्त करते है। उसे संस्कृत काव्यशास्त्र में नाट्य, रूपक और रूप्य नामक शब्दों से लिया गया है। नट् धातु से नाटक शब्द का विकास हुआ है। नट् का अर्थ अभिनय और न्त्य दोनों से है, किन्तु आज के समय में इसका प्रयोग केवल अभिनय के अर्थ में होने लगा है। भरत मुनि के अनुसार समस्त संसार के भावों का अनुकरण करना ही नाट्य है। काव्य की भांति नाटक भी प्राचीन विद्या है। वैसे इसका विकास संस्कृत–परम्परा–साहित्य में हो चुका है। हिन्दी नाटक के प्रतिस्थापन में की रंगमंच एवं रेडियों–रूपक के प्रचलन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मूल शब्द : वर्गीकरण, दुखान्त और सुखान्त, दृष्टि, संवाद, मनोंरजंन, अभिनय, कलात्मक, लेखक, रचना, अन्यान्याश्रम सम्बन्ध, अशिक्षित व शिक्षित वर्ग, अभिनीत, रेडियों–रूपक, प्रचलन, वेशभूषा, संस्कृत काव्यशास्त्र, बुद्विगम्य, प्रतिस्थापना, परिवर्तित, प्रत्यक्ष, संसार आदि।

प्रस्तावना
हिन्दी नाटक को रोचक बनाने के लिये उसमें निम्न गुण विद्यमान होने चाहिये, जो इस प्रकार से है। विचार प्रधान, गीति नाटक, एंकाकी का होना, प्रतीकात्मकता का होना और प्रहसन का प्रयोग होना नाटक को अधिक रोचक बनाने में मदद करते है। नाटक और रंगमंच एक दुसरे के पूरक है। दोनों का एक साथ में चलना जरूरी है। अधिकतर नाटककारों को शिकायत रहती है कि कलात्मक उपलब्धि में रंगमंच पीछे रह जाता है और नाटक आगे निकल जाता है। जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों को गिनाया जा सकता हैं। महान लेखक मोहन राकेश ने अपने जीवन में चार सफल नाटकों की रचना की आषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे–अधूरे और पैर तले की जमीन। हिन्दी में नाटक का अपना ही स्थान होता है। जिस प्रकार से नाटक अपना स्थान हिन्दी में बनाये हुये है, उसकी प्रकार से कहानी और कविता का अपने क्षेत्र में स्थान है। नाटक के माध्यम से आम जनता को मार्ग दर्शन करवाया जा सकता है।
इसमें आधे–अधूरे नामक नाटक की सफलता के लिये इन चार चीजों के चुना गया, जिससे वह एक सफल नाटक बन सका।

1. स्वरूप विधान की दृष्टि से अभिनेयता
2. भाषागत अभिनेयता
3. दृश्य विधान की दृष्टि से अभिनेयता
4. संवादों की दृष्टि से सफल अभिनेयता।

इन चार प्रकार की विधाओं से सचमुच में नाटक की अभूतर्पूव उपलब्धि सामने आती है। नाटक अभिनेय की दृष्टि से हिन्दी नाट्य परम्परा को एक नई गति व दिशा प्रदान करता है। नाटक की रोचकता से वह और अधिक लोकप्रिय हो जाता है। नाटक को क्रमाअनुसार लिखकर उसकी योग्यता को और अधिक बढाया जा सकता है। नाटक को लिखते समय संवादों का सफल समय पर चयन उसकी सफलता को और अधिक बढाने में मदद करता है। आधुनिक युग मे नाटक का प्रदर्शन करके समाज में होने वाली धटनाओं को दिखेाकर समाज को उसके प्रति बताने में बहुत अधिक मदद करता है। इससे नाटक का महत्व अपने स्थान पर हिन्दी में बहुत ही सराहनीय माना जा सकता है। नाटक के माध्यम से समाज को आईना दिखाया जा रहा है।
नाटक समाज का अन्यान्याश्रम सम्बन्ध है। समाज के अशिक्षित व शिक्षित वर्ग दोनों ही मनोंरजंन का हिस्सा होते है। नाटक को समाज के पास आना पडता है। शिक्षित श्रेणी के लोगों के लिये नाटक बोधगम्य है, परन्तु अभिनीत होने के कारण प्रत्यक्ष और मूर्त होने के कारण से अशिक्षित वर्ग के लिये बुद्विगम्य हो जाता है। हिन्दी नाटक में प्रत्येक कलाकार का अपना स्थान पर अलग अलग महत्व होता है, जो वो अपने समय के अनुसार पूर्ण करते है। हिन्दी नाटक में कलाकार अपना अपना रोल अदा करके उसे रोचक बनाने में लगे रहते है। ये पहले इसके लिये बहुत सी मेहनत करते है फिर इसको किसी भी प्रोग्राम में दिखाया जाता है। हिन्दी में नाटक का अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान है और हिन्दी में रोचक नाटक से इसका और अधिक महत्व बढ जाता है।

नाटक के अनुकरण के चार प्रकार हो सकते है।
वाचिकः मन के अन्दर के भावों को शब्दों में बोलना, कहने का अंदाज और अभिव्यक्ति में उतार–चढाव को अभिनय में जीवन्त रूप प्रदान करते है।
सात्विकः शरीर के अंगों की सूक्ष्म क्रिया के द्वारा मन के भावों को व्यक्त करना।
आंगिकः भाव को व्यक्त करने के लिये अंगों का संचालन आंगिक अभिनय है।
आहार्यः अभिनय के अन्तर्गत उसका सामान्य रूप और वेशभूषा आती है।

नाटक के निम्न तत्व स्वीकार किये गये है।
1. पात्र और चरित–चित्रण
2. कथानक
3. वातावरण
4. संवाद
5. उदेश्य
6. भाषा शैली
7. अभिनेयता आदि।

नाटक को तैयार करने के लिये सबसे अहम रोल उनके पात्रों का होता है। जिस भी पात्र को जो रोल करने को दिया जाता है। वह उसे अपने पूर्ण सहयोग से पूर्ण करता है। पात्र के बाद में कथानक और वातावरण की बारी आती है। जो कि अपने नाटक के अनुसार उसे पूर्ण करते हैं। इसके बाद में वहां पर मौजूद नाटक मंडली में आपसी संवाद का स्थान होता है। उसके बाद में नाटक को पूर्ण करने का क्या उद्देश्य होता है। इसके बाद में नाटक की कार्य शैली और उसकी भाषा का स्थान आता हैं। ये सब पूर्ण होने से एक सफल नाटक पूर्ण माना जाता है।

उद्देश्य

नाटक को पूर्ण करने के लिये उसमें लिये गये पात्रों के रोल का अहम स्थान माना गया है। नाटक को रोचक बनाने कें लिये वो बहुत मेहनत करते है। हिन्दी में नाटक का अपने स्थान पर बहुत बडा योगदान माना गया है। नाटक के बिना हिन्दी अधुरी रह सकती थी और इसके आने से हिन्दी के विकास में चार चांद लग गये। आधुनिक युग में युवा वर्ग नाटकों के माध्यम से चलकर आगे बढने में बहुत ही सही कदम माना गया है। इससे हिन्दी के विकास के साथ में युवा वर्ग को शिक्षित और आगे ले जाने में बहुत मदद मिल रही है।

नाटकों के भेद

हिन्दी में नाटकों का वर्गीकरण युग अनुसार परिवर्तित होता रहता है। नाटक कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे दुखान्त और सुखान्त नाटक। नाटकों को उसके अच्छे रोल सुखदायक के अनुसार दिखया जा सकता है और उसमें रोचकता दिखानें के लिये दुख के बारे में दिखाकर इसके अपने महत्व को और बढाया जा सकता है। जिसको समाज के लोग अपने अनुसार उसका अनुसरण करते हैं और उसके कदमों पर चलने के लिये प्रयास करते है। हिन्दी नाटको के अनेक लेखक हुये है, उनमें से प्रमुख लेखक डा0 ओझा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है उनके अनुसार – नाटकों के तीन भाग किये जा सकते हैं, जो कि निचे दिये जा रहे है।

क) शैली की दृष्टि से
ख) विषय की दृष्टि से
ग) रंगमंच की दृष्टि से।

निष्कर्ष

नाटक के माध्यम से जन–साधारण में सामाजिक गतिविधियों के प्रति रूचि हो, जो समाज को एकजुट बनाये रखने मे मदद करता है। नाटक मे आधुनिक युग के नये प्रयोग किये जाने लगे है। सामाज को आगे बढानें में हिन्दी नाटक का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक युग में प्रतिदिन नाटकों की मांग बढती जा रही है। आधे–अधूरे नामक नाटक प्रयोग धर्मिता के साथ साथ नाटक के प्रमुख तत्वों के सफल प्रयोग के कारण नाट्य कला दृष्टि से भी उच्च कोटि की रचना सिद्ध हुई है। हिन्दी जगत में आधुनिक काल में नाटक के माध्यम से समाज में होने वाली धटनोओं को दिखाकर प्रेरित किया जा रहा है। जिससे पहले से अधिक नाटक का योगदान अब माना जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी रंगमंच और नाटक। 2015
2. रंगमंच। 2016–17
3. आधुनिक गद्य साहित्य। 2015
4. नाटक आधे–अधूरे लेखक मोहन राकेश। 2017
5. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास। 2016
6. www.google.com
7. www.hindishiyatya.com